

न ह वै तस्य केन चन कर्मणा लोको मीयते KAUSH. UP. 3, 1. य चाकृन्ना डङ्कितुर्वज्ञाणामु ब्रूया मिनानो अकृणोदिदं नः seine Schönheit schwinden lassend RV. 5, 42, 13. — 2) verfehlen (die Richtung): प्रज्ञानतीव न दिशौ मिनाति RV. 1, 124, 3. 5, 80, 4. दिशः सूर्यो न मिनाति प्रदिष्टाः 3, 30, 12. उद्भवो यत्तु मिनतीस्तेन die verirrte, am falschen Orte befindliche Heerde 10, 108, 11. — 3) übertreten, verletzen; vereiteln, verändern NAIGH. 2, 19. तस्य ब्रतानि न मिनन्ति धीराः RV. 7, 31, 11. 47, 3. यस्य ब्रतं न मीयते 2, 8, 3. 38, 7. 10, 111, 4. न मे दासो नापौ मक्त्वा ब्रतं मीमाय पदकं धरिष्ये AV. 5, 11, 3. स्वराज्यम् RV. 5, 82, 2. 8, 82, 11. ऋतस्य घोषा न मिनाति धामं 1, 123, 6. 6, 21, 3. 67, 9. देवो देवानां न मिनाति धामं 10, 48, 11. 89, 3. नकिर्द्वा मिनीमसि नकिरा योपयामसि मन्त्र्युत्थं चरामसि 134, 7. — Vgl. अमीतवर्षा.

— caus. मापयति, अमीमयत् P. 7, 4, 93, Vārt. 2. Statt स मापितः BHĀG. P. 7, 8, 51 ist समापित (caus. von आप् mit सम् in der Bed. umbringen, tödten; vgl. KATHA. 48, 67) zu lesen.

— desid. मित्सति, ऽते P. 7, 4, 54. 58. Vop. 19, 9. 12.

— आ 1) stören, vereiteln: नकिर्दित्सत्तमा मित् RV. 7, 32, 5. 8, 28, 4. 9, 61, 27. यानि दाधार् नकिरा मिनाति 6, 30, 2. 4, 30, 23. ब्रतानि 5, 69, 4.

— 2) (heimlich) beseitigen, verschwinden machen (beim falschen Spiel): अग्नीव कृत्वुर्विज्ञं आमिनाना मर्तस्य देवो जरयत्यायुः RV. 1, 92, 10. स सूर्यः पृष्ठीर्विज्ञं इवा मिनाति 2, 12, 5. दिवीव ज्योतिः स्वमा मिमीयाः (scheint 3. pers. zu sein) am Himmel verdrängt er dessen eigenen Glanz 10, 56, 2. व्यावा वर्षां चरत आमिनाने sich gegenseitig entziehend, vertauschend 1, 113, 2. ebenso intens.: नक्तोषासा वर्षामामेर्म्यनि 196, 5. med. sich entziehen, sich davonmachen, verschwinden: आ ते सुपर्णा अमिनत्तं एवैः कृञ्जो नौनाव वृषभो यदीदम् RV. 1, 79, 2. — 3) bei Seite schieben (die Thür): वत्स ईमिनास्तरूपा आ मिमीयात् TBa. 3, 6, 13, 1; vgl. übrigens मीव् mit आ.

— उद् verschwinden: सूर्यस्य चतुर्भुङ्क्त्स्मिमीयात् RV. 10, 10, 9. अथ यत्रैतद्स्माच्छरीराडत्क्रामत्यथैतैरेव रश्मिभिर्बर्धमाक्रमते स अमिति वा होदा मीयते KHĀND. UP. 8, 6, 5.

— प्र, प्र मिनन्ति AV. PAṬ. 3, 86. ऽमीणाति u. s. w. P. 8, 4, 15. Vop. 8, 22. 16, 1. 1) vereiteln, aufheben; zerstören, vernichten: मायिनो मायाः RV. 1, 32, 4. 3, 34, 3. प्रमिनन्ती मनुष्या युगानि 1, 92, 11. 5, 7, 4. 43, 3. यः संमानं न प्रमिनाति धामं ändern, wechseln 7, 63, 3. मन्चुं रिरित्ततः 36, 4. अन्ता 84, 4. 4, 54, 4. मा मातरं प्र मिनीञ्जनित्रीम् (daraus verdorben प्रमिणीमि जनित्रीम् P. 3, 1, 78, Vārt., Sch.) AV. 6, 110, 3. (यः) असुरान् — रजस्तमस्कां प्रमिणाति vernichtet BHĀG. P. 7, 1, 11. med. zu Nichte werden, vergehen so v. a. sterben, umkommen: मा प्र मेष्टाः AV. 8, 1, 5. स ईश्वरः प्रमेतोः TBa. 1, 3, 10, 10. पिता प्रमीयमाणः 2. येषां दीक्षितानां प्रमीयते aus deren Mitte Jemand hinscheidet 4, 6, 5. TS. 6, 2, 8, 4. यस्य गावो वा पुरुषा वा प्रमीयेरन् 2, 2, 2. 4. यदा अयोनि रेतः सिच्यते प्र वै तन्मीयते geht zu Grunde ÇAT. Br. 4, 1, 2, 10. PAÑĀV. Br. 6, 6, 15. KĀTH. 10, 6, 23, 7 (Ind. St. 3, 467, 2). 37, 5. ĀÇV. Ça. 3, 10, 10. नास्य प्रजा पुरा कालात्प्रमीयते KAUSH. UP. S. 137 (13). गजवाजिमुष्या वाप्रमीयाः (weiche nicht zu Grunde gehen dürften) प्रमीयते (यदि) SHADV. Br. 6, 3 in Ind. St. 1, 40, 1. M. 9, 247. MBh. 3, 388. 13, 4236. 4531. R. 2, 75, 28. प्रमीयमान MBh. 12, 5664. प्रमीयमाण 6885. प्रमिम्ये RĀGA-TAR. 8, 448. प्र-

मीत gestorben, todt AK. 2, 8, 2, 86. H. 373. an. 3, 277. Med. t. 126. HALĀ. 3, 7. जीवन्प्रमीतः KĀTH. 11, 5. 8. गर्भे पुरायुषः प्रमीते TS. 5, 1, 5, 7. असंस्कृतं M. 3, 245. ऽपतिका 9, 68. 167. MBh. 9, 3018. 14, 2324. प्रमीत geschlachtet AK. 2, 7, 26. H. an. 3, 277. Med. t. 126. — 2) verfehlen, versäumen (Weg, Zeit), vergessen; vernachlässigen, übertreten: क्रतुं नरो न प्र मिनत्येते RV. 7, 103, 9. मित्रस्य धासिम् 4, 55, 7. भागधेयम् 3, 28, 4. न संस्कृतं प्र मिमीतो गर्मिष्ठा 5, 76, 2. संगिरम् 9, 86, 16. राजा न मित्रं प्र मिनाति धीरः 97, 30. व्रतम् 2, 24, 12. 8, 48, 9. 10, 2, 4. 10, 5. ÇAT. Br. 3, 2, 2, 19. वरुणस्य धामं RV. 4, 5, 4. या स्तोत्रभ्यो विभावयुच्छन्ती न प्रमीयसे 5, 79, 10. प्र व एकौ मिमय भूर्भागः verschulden 2, 29, 15. — 3) verschwinden machen, beseitigen: सूर्यस्य चतुः प्र मिनन्ति वृष्टिभिः RV. 5, 59, 5. so v. a. hinter sich lassen: न ये वार्तस्य प्रमिनन्त्यभूमू 1, 24, 6. प्रमिणात्तम् (= अभिभवत्तम् Sch.) द्विषन्मतीः übertreffend BHĀG. 9, 97. — Vgl. प्रमय fig., प्रमातव्य, प्रमायु fig., प्रमीति, अप्रमीय (der nicht zu Grunde gehen dürfte). — caus. vernichten; tödten: प्रामापयदायुर्दस्योः Nir. 5, 9. इदं सर्वं चराचरम् । संजीवयति चाज्ञं प्रमापयति चाव्ययः ॥ M. 1, 57. स चेतु पथि संरुद्धः पशुभिर्जी रयेन वा । प्रमापयेत्प्राणभूतः 8. 295. प्रमाप्याकामो द्विजम् 11, 89. 129. JĀG. 3, 268. पुत्रं प्रमाप्य (प्रमाप्य ed. Bomb.) MBh. 3, 13322. प्रमापयति (आत्मना कृत्ति ed. Bomb.) चात्मानम् 11, 630. ÇĀṆK. zu BṚH. ĀR. UP. S. 299. प्रमापित RĀGA-TAR. 8, 2180. (ताम्) गोभिः प्रमापयेत् die lasse er durch Stiere tödten JĀG. 2, 279. — Vgl. प्रमापण fig.

3. मि, मी. Die Erklärer nehmen eine solche Wurzel an, welche gehen (मी, मीयति und मार्ययति in dieser Bed. DhĀRUP. 34, 18. meinen gehen) oder dergl. bedeutet. Wir finden मिनति (sic) NAIGH. 2, 14 als गतिकर्मन्; मिनेति Nir. 7, 29 so v. a. अयति; संमिन्वानो (nämlich उदकेन Durga) इवति 10, 21 bei der Etym. von मित्र = sich verbindend mit, zusammen gehend; मीयते (s. u. 2. मि mit उद्) = प्रमीयते = गच्छति ÇĀṆK. zu KHĀND. UP. 8, 6, 5. Die Textstelle इमे एवैतदनुमन्त्रयत आ च परा च मेष्यन् At. Br. 4, 20 wird von ŚĀ. erklärt: आगमिष्यन्नपि पुनरपि परावृत्य गमिष्यन्नपि wenn er her und wieder hinzugehen im Begriff ist. Hier ist eine Entstellung aus एष्यन् möglich. आमिमीयात् (s. u. 2. मि mit आ) erklärt der Comm. zu TBa. 3, 6, 13, 1 durch प्रविशेत्. वि मयते s. u. 2. मा mit वि.

1. मित्, मिमित् wohl eine desid.-Bildung von der in मिश्र, मिस्र erhaltenen Wurzel मिश्र; von den Commentatoren auf मित् zurückgeführt. Nachzuweisen sind nur die Formen मिमित्ति u. s. w. und perf. मिमित्तुम्, मिमित्तुम्, मिमित्ते; mischen, zusammenrühren, schmackhaft zubereiten: मद्यं यज्ञं मिमित्ति RV. 1, 142, 3. 157, 4. 22, 3. 13. 34, 3. 47, 4. 9, 107, 6. मधुं नो व्यावापृथिवी मिमित्ताम् 6, 70, 5. मिमित्तर्यमद्रय इन्द्र तुभ्यम् den Soma 10, 104, 2. VS. 8, 32. PAÑĀV. Br. 21, 10, 12. KĀTH. Çu. 23, 3, 1. med. sich mischen oder gemischt werden: घृतं मिमित्ते घृतमस्य योनिः RV. 2, 3, 11. — Vgl. मिमित्ति fig. und मेत्तण. — caus. मेत्तयति umrühren, mengen ÇAT. Br. 4, 3, 5, 16. 18.

— आ s. आमिता.

— सम् = simpl.: यदा यज्ञं मनेवे संमिमित्तुः (nämlich मधुकशया; vgl. RV. 1, 22, 3. 157, 4) RV. 8, 10, 2.

2. मित् s. म्यत्.